डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,पी-एच.डी.,
अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.शारदा पांडुरंग राऊत ने मेरे निर्देशन में विष्णु प्रभाकर के 'युगे-युगे क्रांति' नाटक का अनुशीलन' लघु शोध-प्रबन्ध,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं,मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ ।

निर्देशक

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

कोल्हापुर ।
तिथि । 23·2·94

प्रस्थापन

" विष्णु प्रभाकर के 'युगे-युगे क्रांति' नाटक का अनुशीलन' लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

(कु.शारदा पांडुरंग राऊत)

कोल्हापुर।
तिथि - 23-2-१९९५

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय - " विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय " ।

१.१ जीवन परिचय --

१.१.१ जन्म तथा बचपन ।

१.१.२ शिक्षा ।

१.१.३ विवाह तथा परिवार ।

१.१.४ प्रभाकर नाम का इतिहास ।

१.१.५ साहित्यिक प्रेरणा-प्रभाव ।

१.२ कृतित्व --

१.२.१ जीवनी साहित्य ।

१.२.२ कहानी संग्रह ।

१.२.३ उपन्यास साहित्य ।

१.२.४ नाटक साहित्य ।

१.२.५ एकांकी - संग्रह

१.२.६ बाल साहित्य एवं अन्य स्फुट रचनाएँ ।

निष्कर्ष -

पृष्ठ क्रमांक

द्वितीय अध्याय - ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक की कथावस्तु ।

२.१ कथावस्तु ।

२.२ कथावस्तु में चित्रित संघर्ष का स्वरूप ।

२.२.१ प्रथम पीढ़ी ।

२.२.२ दूसरी पीढ़ी ।

२.२.३ तीसरी पीढ़ी ।

२.२.४ चौथी पीढ़ी ।

२.२.५ पाँचवीं पीढ़ी ।

निष्कर्ष --

तृतीय अध्याय - ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक में पात्र तथा चरित्र-चित्रण ।

३.१ कल्याणसिंह ।

३.२ प्यारेलाल ।

३.३ शारदा और विमल ।

३.४ प्रदीप ।

३.५ सुरेखा ।

३.६ अनिरुध्द ।

३.७ अन्विता ।

३.८ देवीप्रसाद ।

निष्कर्ष --

पृष्ठ क्रमांक

चतुर्थ अध्याय - "युगे - युगे क्रांति" नाटक के संवाद ।"
४.१ सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करनेवाले संवाद ।
४.२ बाह्य संघर्ष को उद्घाटित करनेवाले संवाद ।
४.३ अंतरसंघर्ष को उद्घाटित करनेवाले संवाद ।
४.४ प्रेम की भावना से युक्त संवाद ।
४.५ छोटे-छोटे संक्षिप्तता से युक्त संवाद ।
४.६ स्वभावगत या चरित्रगत विशेषता प्रकट करनेवाले संवाद ।
४.७ दीर्घ या लम्बे संवाद ।
निष्कर्ष --

पंचम् अध्याय - "युगे - युगे क्रांति" नाटक का देशकाल-वातावरण तथा शीर्षक ।"
५.१ सन १८७५ के समय का वातावरण ।
५.२ सन १९०१ के समय का वातावरण ।
५.३ सन १९२० के समय का वातावरण ।
५.४ सन १९४२ के समय का वातावरण ।
५.५ स्वातंत्र्योत्तर कालीन वातावरण ।
निष्कर्ष ।
५.६ "युगे-युगे क्रांति" नाटक का शीर्षक ।

निष्कर्ष --

पृष्ठ क्रमांक

षष्ठ अध्याय - 'युगे - युगे क्रांति' नाटक की भाषाशैली तथा उद्देश्य ।

६.१ चरित्र को उद्घाटित करनेवाली भाषा ।

६.२ तीव्रता और तेजस्विता से युक्त भाषा ।

६.३ प्यार भरी भाषा ।

६.४ जीवन का कटुसत्य बतानेवाली भाषा ।

६.५ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग ।

६.६ व्यंग्यात्म भाषा का प्रयोग ।

६.७ मजाक उडानेवाली भाषा का प्रयोग ।

६.८ मुँहावरों और कहावतों से युक्त भाषा ।

६.९ संस्कृत शब्दों का प्रयोग ।

निष्कर्ष --

६.१० 'युगे - युगे क्रांति' नाटक का उद्देश्य ।

निष्कर्ष --

उपसंहार ।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची ।

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य --

विष्णु प्रभाकर स्वातंत्र्योत्तर काल के श्रेष्ठ नाटककार हैं। उन्होंने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विषयपर नाटक लिखे हैं। 'विष्णु प्रभाकर के 'युगे - युगे क्रांति' नाटक का अनुशीलन' ही प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

विष्णु प्रभाकर के इस नाटक पर शोध-कार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली कि जब मैंने 'युगे - युगे क्रांति' नाटक पढ़ा। विवाह प्रथा में आए परिवर्तन के साथ संघर्ष चित्रण और मूल्य विघटन का इतना प्रभावी चित्रण मैंने अन्य किसी नाटक में नहीं पढ़ा था। प्रभाकर जी के इस नाटक ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया। उसी समय मैंने प्रभाकर जी के इस नाटक का विशेष अध्ययन करने का दृढ़संकल्प किया। इस लघु शोध-प्रबन्ध के पृष्ठों पर मेरा संकल्प साकार हुआ है।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे --

१) विष्णु प्रभाकर का जीवन किस तरह रहा है ?

२) 'युगे - युगे क्रांति' नाटक में लेखक ने प्रधान रूप से किस विषय का विवेचन किया है ?

३) 'युगे-युगे क्रांति' नाटक में लेखक ने किन-किन कालखण्डों की पीढ़ियों का चित्रण किया है ?

४) प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य क्या है ?

अध्ययनके उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे मिले उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित ८: अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है —

प्रथम अध्याय -- " विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय "

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय आवश्यक होता है। " विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय" इस अध्याय को मैंने दो विभागों में विभाजित किया है।

अ) जीवन परिचय।

ब) कृतित्व।

विष्णु प्रभाकर के जीवन परिचय के अंतर्गत उनका जन्म तथा बचपन, विवाह तथा परिवार, प्रभाकर नाम का इतिहास, साहित्यिक प्रेरणा-प्रभाव का विवेचन किया है। कृतित्व के अंतर्गत अब तक प्रकाशित जीवनी, कहानी-संग्रह, उपन्यास, नाटक, एकांकी, बाल साहित्य एवं स्फुट रचनाएँ आदि का संक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं। मेरा यह निष्कर्ष है कि लेखक के जीवन का उनकी रचना पर प्रभाव पड़ा है।

द्वितीय अध्याय -" युगे - युगे क्रांति नाटक की कथावस्तु"

विष्णुजी ने ' युगे - युगे क्रांति' नाटक में विवाह प्रथा में आए क्रांति का चित्रण किया है। इस अध्याय का अनुशीलन करते समय कथावस्तु का विवेचन किया है और कथावस्तु में चित्रित संघर्ष का स्वरूप भी चित्रित किया है। नाटक - - कारने कथावस्तु के तत्वों का इसमें पूरी तरह से निर्वाह किया है।

कथानक का आरंभ कौतुहलवर्धक है। इसके विकास में विभिन्न पीढियों के लोगों द्वारा की क्रांति में संघर्षवाली स्थिति विद्यमान है और नाटक की चरमसीमा पाँचवीं पीढी के अनिरुध्द और अन्विता के मुक्त भोगी रूप में दिखाई देती है।

देवीप्रसाद के कथन के साथ अंत दिखलाया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय -" युगे - युगे क्रांति नाटक मे पात्र तथा चरित्र-चित्रण"

इस नाटक की प्रत्येक पीढी में जिस पात्र ने क्रांति की है उसका चित्रण इस अध्याय में किया है। इसमें चित्रित कल्याणसिंह सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश करता है किन्तु बेटा जब विधवा से विवाह करना चाहता है तो वह उसका विरोध करता है। प्यारेलाल एक विधवा से विवाह करता है लेकिन बेटी शारदा जब सिर पर पल्ला नहीं लेती, आंदोलन में भाग ले भाषण देती है और अंतर्जातीय विवाह करती है तो वह उसका विरोधी बन जाता है। शारदा ने विमल के साथ अंतर्जातीय विवाह किया किन्तु उनके बेटे प्रदीप ने जैनेट से जब अंतधर्मीय विवाह किया तब दोनों ने जैनेट का नाम जान्हवी न बदलने की वजह से प्रदीप - जैनेट को घर से निकाल दिया। प्रदीप ने अंतधर्मीय विवाह किया किन्तु अपने बेटे अनिरुध्द तथा बेटी अन्विता का उन्मुक्त व्यवहार पसंद न कर उनका विरोध किया। इस प्रकार हर पात्र अपने युवावस्था में क्रांतिकारी है और अंत में वही पात्र रूढीप्रिय बन जाता है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय -" युगे - युगे क्रांति नाटक के संवाद"

इस अध्याय के अंतर्गत नाटक में आए विविध प्रकार के संवादों का विवेचन किया है। नाटक में सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करनेवाले संवाद, वाद संघर्ष को उद्घाटित करनेवाले संवाद, प्रेम की भावना से युक्त संवाद, छोटे-छोटे संक्षिप्तता से युक्त संवाद, स्वभावगत या चरित्रगत विशेषता प्रकट करनेवाले संवाद तथा दीर्घ या लम्बे संवादों का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

पंचम् अध्याय -- " युगे - युगे क्रांति" नाटक का देशकालवातावरण तथा शीर्षक "

इस अध्याय के अंतर्गत देश-काल वातावरण को पाँच भागों में विभाजित किया है, जैसे -- सन १८७५ के समय का वातावरण, सन १९०१ के समय का वातावरण, सन १९२० के समय का वातावरण, सन १९४२ के समय का वातावरण और स्वातंत्र्योत्तर कालीन वातावरण का विवेचण किया है तथा अंत में शीर्षक के बारे में विवेचन किया है और अंत में निष्कर्ष दिये हैं।

षष्ठ अध्याय - " युगे - युगे क्रांति" नाटक की भाषाशैली तथा उद्देश्य "

प्रस्तुत नाटक में चरित्र को उद्घाटित करनेवाली भाषा, तीव्रता और तेजस्विता से युक्त भाषा, प्यार भरी भाषा, जीवन का कटुसत्य बताने वाली भाषा, भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग, व्यंग्यात्म भाषा का प्रयोग, मजाक उडानेवाली भाषा का प्रयोग, मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा का प्रयोग, संस्कृत शब्दों का भाषा में प्रयोग तथा उर्दू शब्दों से युक्त भाषा आदि का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

अंत में उपसंहार दिया गया है। यह प्रबन्ध का सार-रूप है। इस में पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दति से निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए गए है। उपसंहार के उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को संपन्न बनाने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा --

१) ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

२) ग्रंथालय, न्यू कॉलेज, कोल्हापुर।

इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोधकार्य में किया है।

शोधकार्य के संकल्प की पूर्ति श्रध्देय गुरुवर डॉ.अर्जुन चव्हाण जी , अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे संपन्न होता ? आपके गहरे अध्ययन का मैंने पूरा लाभ उठाया है। इन ऋणों के प्रति दान में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरुवर के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं कर ही क्या सकती हूँ ? भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे संतोष होगा।

मेरा यह कार्य माता-पिता के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ है।

इस लघु शोध-प्रबन्ध का टंकलेखन श्री बाळकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापुर ने उत्तम और बडी तत्परता से कर दिया, इसलिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ। इस कार्य को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों,सहृदयों एवं स्वजनों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में मेरी सहायता की है अंत में उन सब का आभार मानकर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

कोल्हापुर। (कु.शारदा पांडुरंग राऊत)

तिथि :